नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

समाधान का केंद्र बनें संसद

संसद को देश का सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच माना जाता है. यह वह पवित्र स्थान है जहां जनता द्वारा चुने गए जनप्रतिनिधि राष्ट्र के भविष्य का खाका तैयार करते हैं. लेकिन यह दुखद है कि हाल के वर्षों में संसद की छवि लगातार गिरती जा रही है. बहस और संवाद की जगह अब शोरगुल और नारेबाजी ने ले ली है. इससे न केवल लोकतंत्र की गरिमा को चोट पहुंचती है, बल्कि जनता का विश्वास भी डगमगाता है. मानसून सत्र की शुरुआत में सरकार और विपक्ष ने यह सहमति जताई कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले और उसके जवाब में संचालित ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा होगी. यह पहल स्वागत योग्य है, क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे गंभीर विषयों पर खुली और ईमानदार चर्चा आवश्यक है. लेकिन अनुभव बताता है कि सर्वदलीय बैठकों में किए गए वादे अक्सर सदन में खोखले साबित होते हैं. सदन का समय मुद्दों पर विमर्श में नहीं, बल्कि हंगामे में जाया होता है. यह स्थिति लोकतंत्र के लिए खतरनाक है. संसद का हर मिनट जनता की गाढ़ी कमाई से चलता है. जब सदन के कीमती घंटे नारेबाजी में बर्बाद होते हैं, तो इसका अर्थ है कि जनता के पैसे को व्यर्थ खर्च किया जा रहा है. इस प्रवृत्ति से केवल संसदीय कार्यक्षमता ही नहीं, बल्कि नीति-निर्माण की प्रक्रिया भी प्रभावित होती है. राष्ट्रीय महत्व के विधेयक बिना चर्चा के पारित होने लगते हैं. क्या यही लोकतंत्र का असली चेहरा है? सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों को अपनी-अपनी भूमिका समझनी होगी.

सरकार का दायित्व है कि वह विपक्ष की चिंताओं को गंभीरता से सुने और अहंकार से बचे. वहीं विपक्ष का कर्तव्य है कि वह विरोध के नाम पर हंगामा न करे. लोकतंत्र में असहमति का स्थान है, लेकिन यह असहमति रचनात्मक होनी चाहिए, विध्वंसकारी नहीं. कई बार ऐसा देखा जाता है कि विपक्ष के कुछ नेता सिर्फ हंगामा करने के उद्देश्य से सदन में आते हैं. सत्ता पक्ष भी इसे अनदेखा कर आगे बढ़ना आसान समझता है. यह रवैया लोकतंत्र की आत्मा के विपरीत है. ऑपरेशन सिंदूर पर होने वाली चर्चा एक अवसर है—यह दिखाने का कि भारत का लोकतंत्र परिपक्व है. यह संदेश भी देना होगा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर हम सब एकजुट हैं. दुर्भाग्य से, विपक्ष के कुछ बयानों ने पहले पाकिस्तान और चीन जैसे देशों को फायदा पहुंचाया. ऐसी गैर-जिम्मेदाराना बयानबाजी से बचना होगा.

संसद को शोरगुल का मंच नहीं, समाधान का केंद्र बनाना होगा. जनता ने अपने जनप्रतिनिधियों को इसलिए चुना है कि वे उसके हित की बात करें, समस्याओं का हल निकालें. संसद में जितनी गहराई और गुणवत्ता वाली बहस होगी, लोकतंत्र उतना ही मजबूत होगा. हंगामा करने से न देश का भला होगा, न जनता का. लोकतंत्र का धर्म बहस है, टकराव नहीं. बहरहाल, संसद का मानसून सत्र 21 जुलाई, 2025 को शुरू हो गया है और 21 अगस्त, 2025 तक चलेगा. इस दौरान कुल 21 बैठकें होंगी. सरकार ने इस सत्र के लिए कई महत्वपूर्ण विधायी कार्य निर्धारित किए हैं.

सरकार इन विधेयकों के अलावा मणिपुर के लिए अनुदान मांगों (2025-26) पर भी चर्चा करेगी और संबंधित विनियोग विधेयक पेश करेगी. संसद के इस सत्र में विपक्ष द्वारा विभिन्न मुद्दों पर सरकार को घेरने की उम्मीद है, जिसमें ऑपरेशन सिंदूर, पहलगाम आतंकी हमला और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के भारत-पाकिस्तान के बीच युद्धविराम में मध्यस्थता के दावे जैसे मुद्दे शामिल हैं. सरकार ने इन सभी मुद्दों पर नियम और परंपराओं के अनुसार चर्चा करने की अपनी इच्छा व्यक्त की है. उम्मीद की जानी चाहिए कि संसद में पक्ष और विपक्ष दोनों अपनी जिम्मेदारी समझ कर जनता के प्रति कर्तव्य का निर्वहन करेंगे.

स्वतंत्रता संग्राम के महानायक चन्द्रशेखर आज़ाद

सुरेन्द्र शर्मा
प्रदेश कार्यसमिति सदस्य
भारतीय जनता पार्टी

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों में चन्द्रशेखर आजाद का नाम सदा अग्रणी रहेगा. उनका जन्म 23 जुलाई, 1906 को ग्राम भाबरा (जिला झाबुआ, वर्तमान में जिला आलीराजपुर मध्य प्रदेश) में हुआ था. उनके पूर्वज गाँव बदरका (जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश) के निवासी थे; पर अकाल के कारण इनके पिता श्री सीताराम तिवारी भाबरा में आकर बस गये थे. बचपन से ही चन्द्रशेखर का मन अंग्रेजों के अत्याचार देखकर सुलगता रहता था. किशोरावस्था में वे भागकर अपनी बुआ के पास बनारस आ गये और संस्कृत विद्यापीठ में पढ़ने लगे.

बनारस में ही वे पहली बार विदेशी सामान बेचने वाली एक दुकान के सामने धरना देते हुए पकड़े गये. थाने में हुई पूछताछ में उन्होंने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतन्त्रता और घर का पता जेलखाना बताया. इस पर बौखलाकर थानेदार ने इन्हें 15 बेंतों की सजा दी. हर बेंत पर ये 'भारत माता की जय' बोलते थे. तब से ही इनका नाम आजाद प्रचलित हो गया. आगे चलकर आजाद ने सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से देश को आजाद कराने वाले युवकों का एक दल बना लिया. भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, बिस्मिल, अशफाक, मन्मथनाथ गुप्त, शचीन्द्रनाथ सान्याल, जयदेव आदि उनके सहयोगी थे.

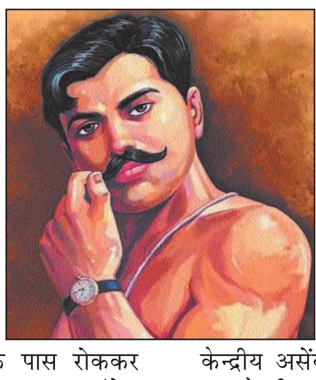

आजाद तथा उनके सहयोगियों ने नौ अगस्त, 1925 को लखनऊ से सहारनपुर जाने वाली रेल को काकोरी स्टेशन के पास रोककर सरकारी खजाना लूट लिया. यह अंग्रेज शासन को खुली चुनौती थी, अत: सरकार ने क्रान्तिकारियों को पकड़ने में पूरी ताकत झोंक दी. पर आजाद को पकड़ना इतना आसान नहीं था. वे वेष बदलकर क्रान्तिकारियों के संगठन में लगे रहे. ग्वालियर में रहकर इन्होंने गाड़ी चलाना और उसकी मरम्मत करना भी सीखा. 17 दिसम्बर, 1928 को इनकी प्रेरणा से ही भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु आदि ने लाहौर में पुलिस अधीक्षक कार्यालय के ठीक सामने सांडर्स को यमलोक पहुँचा दिया. अब तो पुलिस बौखला गयी; पर क्रान्तिवीर अपने काम में लगे रहे. कुछ समय बाद क्रान्तिकारियों ने लाहौर विधानभवन में बम फेंका. यद्यपि उसका उद्देश्य किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं था. बम फेंककर भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने आत्मसमर्पण कर दिया. उनके वीरतापूर्ण वक्तव्यों से जनता में क्रान्तिकारियों के प्रति फैलाये जा रहे भ्रम दूर हुए. दूसरी ओर अनेक क्रान्तिकारी पकड़े भी गये. उनमें से कुछ पुलिस के अत्याचार न सह पाये और मुखबिरी कर बैठे. इससे क्रान्तिकारी आन्दोलन कमजोर पड़ गया.

केन्द्रीय असेंबली में बम चन्द्रशेखर आज़ाद के ही सफल नेतृत्व में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली की केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट किया. यह विस्फोट किसी को भी नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से नहीं किया गया था. विस्फोट अंग्रेज़ सरकार द्वारा बनाए गए काले क़ानूनों के विरोध में किया गया था. इस काण्ड के फलस्वरूप क्रान्तिकारी बहुत जनप्रिय हो गए. केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट करने के पश्चात भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने स्वयं को गिरफ्तार करा लिया. वे न्यायालय को अपना प्रचार-मंच बनाना चाहते थे.

आज़ाद को 28 मई 1930 को भगवती चरण वोहरा की बम-परीक्षण में हुई शहादत से भी गहरा आघात लगा था. इसके कारण भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना भी खटाई में पड़ गयी थी. भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु की फाँसी रुकवाने के लिए आज़ाद ने दुर्गा भाभी को गांधीजी के पास भेजा जहाँ से उन्हें कोरा जवाब दे दिया गया था. आज़ाद ने अपने बलबूते पर झाँसी और कानपुर में अपने अड्डे बना लिये थे. झाँसी में मास्टर रुद्र नारायण, सदाशिव मलकापुरकर, भगवानदास माहौर तथा विश्वनाथ वैशम्पायन थे जबकि कानपुर में पण्डित शालिग्राम शुक्ल सक्रिय थे

आखिरी सांस तक अंग्रेजों से लड़े चन्द्रशेखर आजाद॥ - क्या आप जानते है अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद अपनी इस एकमात्र तस्वीर को नष्ट करना चाहते थे. चंद्रशेखर आज़ाद की आज़ाद की एक तस्वीर हम सबने देखी है. जनेऊ पहने हुए और मूंछों पर ताव देते हुए इस तस्वीर का किस्सा बड़ा दिलचस्प है काकोरी एक्शन के बाद जब आज़ाद गुप्त प्रवास पर थे, तो वो झांसी में अपने दोस्त मास्टर रुद्रनारायण के घर पर भी रुके थे. रुद्रनारायण जी को फोटोग्राफी का शौक़ था. उन्होने ही ज़िद करके आज़ाद की ये फोटो खींची थी.

आज़ाद को हर वक़्त जासूसी का ख़तरा रहता था इसलिए वो नहीं चाहते थे कि उनकी फोटो खींची जाए. उस वक़्त तक उनकी एक भी फोटो अंग्रेज़ों के पास नहीं थी. मास्टर रुद्रनारायण ने कहा कि उन्हें एक फ़ोटो इसलिए खिंचवा लेनी चाहिए कि आने वाले वक्त में लोग समझ सकें कि भारत का ये महान क्रांतिकारी उन्ही की तरह आम शक्ल सूरत का था मगर उसकी भावना और साहस ने उसे ख़ास बना दिया.

ग्वालियर चंबल डायरी

नरेंद्र सिंह के तंज से महल खेमा हैरत में, फिर खुला फ्रंट

हरीश दुबे

देखो, सब्र और इंतजार करो, के फलसफे पर चलने वाले नरेन्द्र सिंह तोमर संयत, मितभाषी और सुलझी हुई राजनीति के लिए जाने जाते हैं. उन्हें बहुत ही कम दफा आपा खोते हुए देखा गया है. भाषणों में विरोधियों पर आक्रामक होने से बचते हैं लेकिन इस बार मुरैना में उन्होंने बेलाग अंदाज में जो कुछ कहा और घर के ही विरोधियों पर जो शब्दबाण छोड़े, उससे उनके विरोधी ही नहीं चौंके बल्कि उन्हें करीब से जानने वाले समर्थक भी ये आक्रामक तेवर देख अचरज में पड़ गए. ग्वालियर चंबल अंचल में विकास कार्यों का श्रेय लेने को लेकर उनके व सिंधिया के दरम्यान कोल्डवार चलता रहता है लेकिन दोनों नेता अब तक एक दूसरे के खिलाफ सपाट टिप्पणियां करने से बचते रहे हैं. नरेन्द्र सिंह ने इस बार जो कुछ कहा, उससे महल का खेमा नाराज है.

दरअसल, नरेन्द्र सिंह ने अपने विधानसभा क्षेत्र दिमनी में सरकारी कार्यक्रम में सिंधिया का नाम लिए बिना कह दिया कि जो लोग हर योजना का श्रेय लूटकर मै.. मै करते फिरते हैं उन्हे शायद नहीं पता कि अंचल में जो भी विकास हो रहा है वो भाजपा सरकार बनने की वजह से हो रहा है, वरना जब प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी तब मै.. मै करने वालों ने क्या कर लिया? राजनीति के जानकारों से लेकर आम कार्यकर्ताओं तक का यही मानना है कि नरेन्द्र सिंह का इशारा सिंधिया की ओर था. नरेंद्र सिंह द्वारा सार्वजनिक रूप से कसे गए तंज पर सिंधिया खेमे की ओर से अब तलक कोई पलटवार नहीं हुआ है. दरअसल, ग्वालियर से नरेंद्र सिंह के कट्टर समर्थक माने

जाने वाले भारत सिंह कुशवाह लोकसभा में नुमाइंदगी कर रहे हैं. ग्वालियर के लिए मंजूर होने वाले विकास कार्यों का सेहरा वे अपने सिर बांधते हैं जबकि सिंधिया के समर्थक इसे अपने नेता के प्रयासों का नतीजा बताते नहीं थकते. चाहे महल में आयोजित भोज का मामला हो, या फिर यूनिवर्सिटी में जीवाजीराव सिंधिया की प्रतिमा के लोकार्पण का आयोजन, ग्वालियर सांसद को नहीं बुलाया गया. हालात ने यहां तक मोड़ लिया कि बीच में कुछ दिन तक सिंधिया ने ग्वालियर के मामलों से दूरी बना ली थी और खुद को सिर्फ अपने संसदीय क्षेत्र शिवपुरी गुना तक सीमित कर लिया था. रिश्तों में जमी बर्फ तब कुछ घुली जब इसी महीने सिंधिया और भारतसिंह ग्वालियर से बेंगलुरु के लिए शुरू नई ट्रेन को एक साथ हरी झंडी दिखाते नजर आए लेकिन नरेन्द्र सिंह के ताजा तंज ने फिर रिश्ते तल्ख कर दिए हैं.

ऑब्जर्बर की रिपोर्ट पर छत्रप हावी

प्रदेश कांग्रेस सदर के दिल्ली पहुंचते ही ग्वालियर चंबल संभाग में नए कांग्रेस जिलाध्यक्षों की सूची को लेकर सरगर्मी तेज हो गई है. खबर यही है कि जीतू, राहुल और खड़गे से मिल सकते हैं और उनकी सहमति मिलते ही अगस्त के पहले हफ्ते तक जिलाध्यक्षों की घोषणा का रास्ता साफ हो जाएगा. राष्ट्रीय महासचिव वेणुगोपाल के पास दावेदारों के पैनल पहले ही केंद्रीय और प्रदेश पर्यवेक्षकों ने पहुंचा दिए हैं.

एक और नेता पुत्र की लांचिंग की तैयारी

इन दिनों ग्वालियर में भाजपा हलकों में जिला नेतृत्व से लेकर कार्यकर्ता तक पत्रकारिता से राजनीति में आकर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और दो बार राज्यसभा सदस्य रह चुके स्व. प्रभात झा की पहली पुण्यतिथि पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की तैयारियों में व्यस्त हैं. हालांकि यह आयोजन जिला इकाई के मार्गदर्शन में हो रहे हैं लेकिन तैयारियों की पूरी कमान दिवंगत नेता के बेटे तुष्मुल झा ने संभाल रखी है. प्रभातजी के जीवनकाल से ही तुष्मुल भाजपा की राजनीति में सक्रिय हैं लेकिन पार्टी में एक व्यक्ति एक पद के सिद्धांत के चलते तुष्मुल को अब तक न संगठन में बड़ी जिम्मेदारी मिली और न सत्ता में कहीं एडजस्ट हो सके. प्रभात झा के असामयिक निधन के बाद अब तुष्मुल अपने पिता की राजनीतिक विरासत को संभालने के लिए तैयार हैं. हालांकि प्रथम पुण्यतिथि पर अटल सभागार में हो रहा यह पुण्य स्मृति समारोह किसी भी राजनीतिक निहितार्थ से दूर है लेकिन सियासी गलियारों में इस आयोजन को प्रदेश की राजनीति में एक और नेतापुत्र की लांचिंग बताया जा रहा है. सियासत के सफर में प्रभात झा के शिवराज सिंह से लेकर नरेन्द्र सिंह तक से बेहतर रिश्ते रहे और जीवन के उत्तरार्ध में उनके सिंधिया से भी ताल्लुक ठीक हो गए थे, लिहाजा तुष्मुल की राह में मुश्किल नहीं है लेकिन शिवराज, नरेंद्र सिंह और सिंधिया के सुपुत्रों का भी राजनीतिक रुझान छिपा नहीं है.

चुनाव आयोग का जवाबी हलफनामा

आधार कार्ड, राशन कार्ड स्वीकार नहीं

बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव दिया था कि आधार कार्ड व राशन कार्ड को सबूत के तौर पर स्वीकार किया जाए लेकिन चुनाव आयोग ने इसे न मानते हुए जवाबी हलफनामा दायर कर कहा कि वह नागरिकता निर्धारित करने वाला संवैधानिक प्राधिकरण है. 11 दस्तावेजों की सूची में आधार का समावेश नहीं है. संविधान के अनुच्छेद 326 के तहत आधार से किसी की अर्हता पहचानी नहीं जा सकती. विभिन्न हाईकोर्ट ने भी इसे नागरिकता का प्रमाण नहीं माना है. जहां तक राशन कार्ड की बात है, चुनाव आयोग ने कहा कि बड़ी तादाद में बोगस राशन कार्ड जारी हुए हैं. केंद्र ने ऐसे 5 करोड़ फर्जी राशन कार्ड रद्द किए हैं. मतदाता फोटो पहचान पत्र के बारे में चुनाव आयोग ने कहा कि यह कार्ड सिर्फ मतदाता सूची की वर्तमान स्थिति दर्शाते हैं. इनको प्रमाण मानकर किसी व्यक्ति को वोटर लिस्ट में शामिल नहीं किया जा सकता. चुनाव आयोग ने इस बात को दोहराया कि उसने जिन 11 दस्तावेजों की जरूरत पर जोर दिया है वह संकेतात्मक हैं, विस्तृत नहीं. चुनाव पंजीयन अधिकारी मतदाता द्वारा पेश किए गए सभी दस्तावेजों पर विचार कर निर्णय ले सकते हैं. चुनाव आयोग ने अपने 24 जून के आदेश में बिहार के वर्तमान 7.8 करोड़ मतदाताओं को वोटर लिस्ट में अपना नाम कायम रखने के लिए 25 जुलाई तक फार्म भरने का निर्देश दिया था. बिहार में 1 जनवरी 2003 में मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण हुआ था. इस तारीख के बाद जिन लोगों का नाम जोड़ा गया है उनसे चुनाव आयोग ने अतिरिक्त दस्तावेज मांगे हैं ताकि उनकी मतदाता के रूप में पात्रता सुनिश्चित की जा सके. चुनाव आयोग के इस कदम से राजनीतिक पार्टियों व सिविल सोसाइटी समूहों की चिंता बढ़ गई है. जो लोग निर्धारित 11 में से एक भी दस्तावेज पेश नहीं कर पाएंगे, उनके नाम मतदाता सूची से हटाए जा सकते हैं. बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरोप लगाया है कि यह पिछले दरवाजे से एनआरसी (नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स) बनाने की चाल है. सुप्रीम कोर्ट ने 10 जुलाई को अपनी सुनवाई में कहा था कि नागरिकता तय करना गृह मंत्रालय का काम है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

काफिले के साथ आगे बढ़ गए मामी को मामा कैसे भूल गए

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, कुछ लोग भुलक्कड़ होते हैं तो किसी की मेमोरी रेजर शार्प होती है. उम्र के साथ कुछ लोगों की स्मरणशक्ति कमजोर हो जाती है. ऐसे व्यक्ति घड़ी, चश्मा, मोबाइल, पर्स, पेन कहीं भी रखकर भूल जाते हैं. स्मृतिभ्रंश या अल्जाइमर हो जाने पर बहुत बुरी हालत होती है. ऐसा व्यक्ति जब भटक जाता है तो उसे अपने शहर, घर, रिश्तेदारों के नाम भी याद नहीं आते.

हमने कहा, च्आज आप भुलक्कड़ों की बात क्यों कर रहे हैं? क्या आप कहना चाहते हैं कि नेता सत्ता पाने के बाद अपना चुनावी वादा भूल जाते हैं?

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, आपने खबर पढ़ी होगी कि पूरे मध्यप्रदेश में मामा कहलाने वाले केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान मामी को भूलकर काफिले सहित राजकोट के लिए रवाना हो गए थे. वो तो अच्छा हुआ कि 1 किलोमीटर आगे जाने पर उन्हें अचानक याद आई कि वह अपनी पत्नी साधना सिंह को अकेला छोड़ आए हैं. उन्होंने तुरंत 22 गाड़ियों का काफिला लौटाया और पत्नी से उनका पुनर्मिलन हुआ. यह अनोखा मामला है जिसमें हड़बड़ी की वजह से नेता बीवी को भी भूल जाता है.

हमने कहा, इसीलिए कुछ नेता अपनी पत्नी को साथ नहीं रखते. क्या आपने पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह को कभी अपनी पत्नी सीतादेवी के साथ देखा? क्या पूर्व पीएम चंद्रशेखर कभी अपनी वाइफ के साथ नजर आए?

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, क्या नेता बनने से व्यक्ति धर्मपत्नी तक को भूल जाता है? पति-पत्नी का 7 जन्मों का साथ होता है. राजनीतिक गठबंधन के पहले वैवाहिक गठबंधन का ध्यान रखना चाहिए. पुरानी फिल्मों में हीरोइन गाती थी- भुला नहीं देना जी, भुला नहीं देना, जमाना खराब है भुला नहीं देना! जब वह विरह वेदना में रहती थी तो गाती थी छोड़ गए बालम, मुझे हाय अकेला छोड़ गए! जब हीरोइन को शंका होती थी कि हीरो उसे भूलकर कहीं चल देगा तो गाने लगती थी- सैंयाजी बहियां छुड़ा के नहीं जाना रे! हमने कहा, भूलने की आशंका से बचने के लिए हीरो-हीरोइन एक साथ गाते थे- इन रस्मों को, इन कसमों को, इन रिश्ते-नातों को मैं ना भूलूंगा-मैं ना भूलूंगी!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हिंदी में पत्नी को जीवन संगिनी और उर्दू में शरीक-ए-हयात कहते हैं. जिंदगी में कभी-कभी भूल-चूक हो जाती है लेकिन उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़ने में ही समझदारी है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11972
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		4	5	■	6
7			■	8		9	
	■	10			■	11	
12	13		■	14	15	■	
■		■	16	■	17	18	■
19				20	■	21	22
23		■	24		25		
	■	26		■	27		

बाएं से दाएं
1. अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति 7. चांदी 8. उच्च स्वर से युद्ध के लिए आव्हान 10. राक्षस, रक्त पीने वाला (सं.) 11. नृत्य, नृत्य की क्रिया या भाव 12. दाह, जलना (सं.) 14. सरिता, दरिया 17. खार, शोरा, सुहागा (सं.) 19. बिना सोचे समझे किसी बात पर विश्वास 21. अंधकार, पाप (सं.) 23. द्वार, गुफा, विदारण, भाव 24. नाक से बोलना, नकियाना 26. सुगंधसार, चंदन के तेल पर उतारा हुआ पुष्पसार, अतर (उर्दू) 27. सुंदर लय-ताल युक्त गीत, गाना (उर्दू)

ऊपर से नीचे
1. एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी गणना पांच पवित्र वृक्षों में है, वट 2. राज्य, मकान बनानेवाला कारीगर 3. काटने से बचा हुआ छोटा रद्दी टुकड़ा 4. लड़कपन, बचपन 5. संपत्ति, सामग्री, कोई उत्तम वस्तु, माला, हार 6. पताका, झंडे का कपड़ा (उर्दू) 9. एकाक्ष, एक आंख वाला 13. बलराम, खेतिहर 15. उपनयन संस्कार, तंत्रोक्त विधि से किसी देवता का मंत्र ग्रहण करने की क्रिया, याग (सं.) 16. जो विश्व का मित्र हो, एक प्रसिद्ध ऋषि (सं.) 18. किंचित लाल, ललछ्रु, सुर्खी लिए हुए 19. भीतर (उर्दू) 20. एक पौधा जिसकी छाल या रेशे से रस्सी बनाते हैं 22. रूठे हुए को प्रसन्न करना, मनुहार करना 25. कम, थोड़ा

Solution 11971

स	ता	नं	द	■	सा	मं	त
मु	रा	द	■	ला	ली	■	र
चि	■	ना	खु	श	■	सा	फ
त	न	■	द	■	ज	र	दा
■	त	र	रा	ना	■	स्व	र
अ	म	न	■	ला	■	त	■
प	स्त	■	नि	य	म	■	धा
ना	क	ना	■	क	र्म	चा	री

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में उतावलीपन में लिये गये निर्णय से हानि होगी, शत्रुपक्ष के षडयंत्रों के कारण मन व्यथित रहेगा, पूर्व नियोजित कार्यों में व्यस्तता रहेगी, वर्ष के मध्य में मित्रों व भाईयों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा, संतान पक्ष से नवीन योजनाओं का विचार विमर्श होगा, वर्ष के अन्त में सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी, जमीन जायजाद से लाभ मिलेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु षडयंत्रों के कारण मन व्यथित रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की पूर्व निर्धारित कार्यों में व्यस्तता रहेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतान पक्ष से नवीन समाचार प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में सुधार होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सांसारिक सुखों की वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का खर्च अधिक रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं का लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक भावुक अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. कोमल शरीर वाला होगा, 5 वर्ष की आयु तक स्वास्थ्य में कुछ नरमीं रहेगी, कम बोलेगा पर जो भी बोलेगा वह अपनी बुद्धिमानी से परिपूर्ण रहेगी. 35 वर्ष की आयु के बाद अच्छी उन्नति करेगा. पिता का भक्त होगा.

मेष- पुमकर मुश्किलें दूर हो सकती है, जरूरतमंदों की मदद करके खुशी होगी, साधनों की अनुकूलता रहेगी, लाभदायक अवसर मिलेंगे.

वृषभ- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, खुले विचारों की सहकर्मी आलोचना करेंगे, नये कामकाज की शुरूआत हो सकती है.

मिथुन- जिद में आकर आप गलत फैसला ले सकते हैं, भौतिक सुख सुविधाओं पर खर्च होगा, शादी विवाह के कार्यों में खर्च होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा.

कर्क- कार्यक्रम में बदलाव से समस्या हो सकती है, बिखरे कार्यों का समेटने में मित्रों की मदद मिलेगी, राजकीय कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है.

सिंह- कार्य को समय पर निपटाने की आदत डालें, सफलता मिलेगी, अधिकार में वृद्धि होगी, मान प्रतिष्ठा मिलेगी, अतिथि रावणमन हो सकता है.

कन्या- स्वास्थ्य कमजोर रहेगा, कामकाज के सिलसिले में यात्रा संभव है, किसी समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी.

तुला- नए संपर्क केरिअर बनाने में सहायक रहेंगे, व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बनी रहने से तनाव रहेगा, वैभवविलासिता की वस्तुओं का संचय होगा.

वृश्चिक- निजी कार्यों को टालने से समस्या हो सकती है, संपत्ति संबंधी विवाद सुलझने के आसार हैं, जो भी मिल जाये उसी में संतोष रहेगा. यश प्राप्त होगा.

धनु- पारिवारिक मामलों में बाहरी दखल से समस्या बढ़ सकती है, मित्र व कुटुम्बियों के संबधं में मधुरता रहेगी, जोड़तोड़ के कामकाज सफल होगा.

मकर- बुजुर्गो के व्यवहार से खिन्नता होगी, उच्च अध्ययन में बेहतर परिणाम मिलेंगे. कामकाज के प्रति लगन, निष्ठा की रूचि रहेगी. कार्य पूरे होने का हर्ष होगा.

कुम्भ- संतान को भाग्योदय के अवसर मिलेंगे, मेहनत का भरपूर लाभ होगा, आय व्यय समान रहेगा, पेट संबंधी विकार होगा, खानपान पर संयम रखें.

मीन- मनमौजी रवैया तरक्की में बाधक हो सकता है, नई जिम्मेदारी आने से व्यस्तता बढ़ेगी, राजकीय कार्यों में समाधान होगा, मागंलिक कार्य में खर्च होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 02 संवत् 2082 श्रावण कृष्ण अमावस्या गुरूवासरे रात 12/36, पुनर्वसु नक्षत्रे शाम 5/32, हर्षण योगे दिन 11/22, चतुष्पाद करणे सू.उ. 5/20 सू.अ. 6/40, चन्द्रचार मिथुन दिन 11/43 से कर्क, पर्व- स्नानदान श्राद्ध अमावस्या, हरियाली अमावस्या, शु.रा. 4,6,7,10,11,2 अ.रा. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण अमावस्या को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, रूई के भाव में तेजी होगी, गेहूं, जौ, चना, चांवल, जूट, पाट बारदान के भाव में मंदी होगी. गुड, शक्कर घी तेल कपास के भाव में नरमीं रहेगी. भाग्यांक 1521 है.

SUDOKU 7104

2						5		
	1			8				9
7					4			
			9			1		
	3						6	
		8			5			
			3					8
5				6			2	
		4						7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7103

2	3	6	8	5	1	4	9	7
9	4	5	7	6	3	8	2	1
1	7	8	2	9	4	6	5	3
3	1	9	6	7	2	5	4	8
5	6	2	1	4	8	3	7	9
7	8	4	5	3	9	1	6	2
4	9	1	3	2	5	7	8	6
8	2	7	4	1	6	9	3	5
6	5	3	9	8	7	2	1	4